सैलाब ने घर तबाह किया
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
छोड़ा हुआ ~ 🙏 मुझे न भूल। मदद कर! 🙏
तंज़िया ~ “मैं तो सिर्फ़ बरकतों के लायक़ था।”
क़ायम ~ क्या अहम है? मेरा असली घर कहाँ लगता है?

गुनाह का एहसास

मुताल्लिक़ा जद्दोजहद

इन्कार ~ छिपा हूँ या बेनक़ाब — क्या मैं मुजरिम हूँ?

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

ख़ौफ़ज़दा ~ सिर्फ़ ख़ुदा ’आदिल मुन्सिफ़ है। फिर इंसानों और अपनी राय से क्यों डरूँ?

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

बहाल ~ टूटा हुआ रिश्ता हमें नेक से — ख़ुदा से — जुदा करता है।

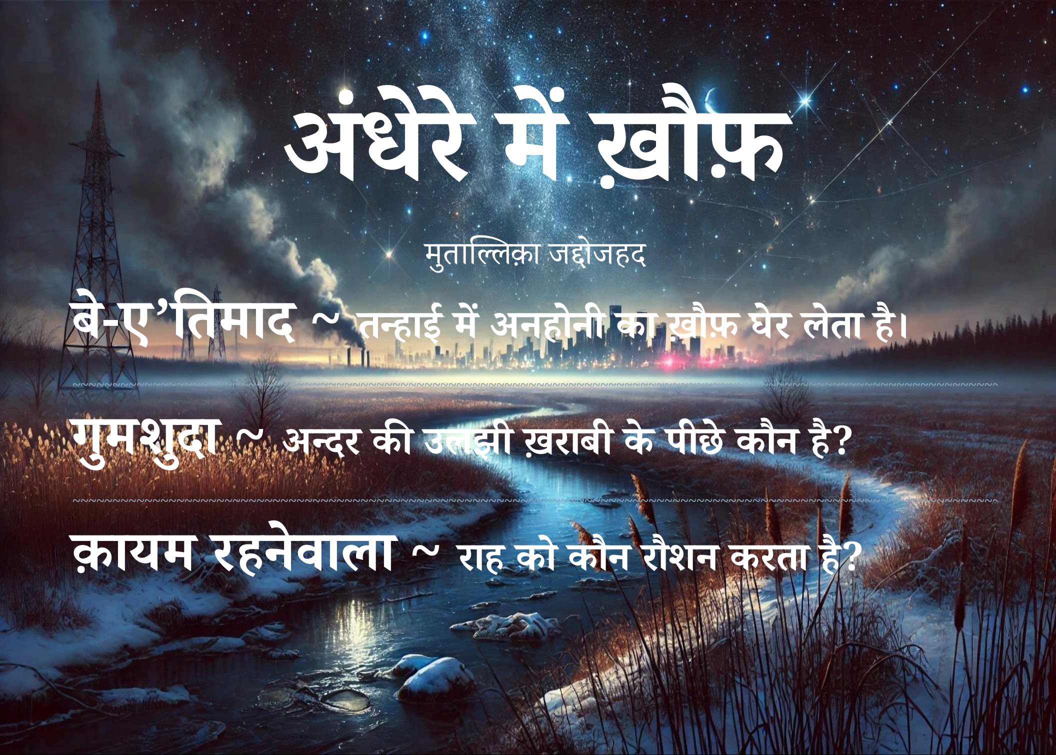
अंधेरे में ख़ौफ़
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
बे-ए’तिमाद ~ तन्हाई में अनहोनी का ख़ौफ़ घेर लेता है।
गुमशुदा ~ अन्दर की उलझी ख़राबी के पीछे कौन है?
क़ायम रहनेवाला ~ राह को कौन रौशन करता है?

नफ़्सानी ख़्वाहिशात
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
तन्हाई ~ “और कोई नहीं जानेगा।”
बुतपरस्ती ~ “अपने दिल के पीछे चल” — बुराई में।
रिफ़ाक़त ~ गुनाह रिश्तों को मार डालता है।

ख़ानदान या ख़ुदा — दोनों नहीं
मुताल्लिका जद्दोजहद
तवक़्क़ो ~ ’इज़्ज़त करूँ या फ़रमाँबरदारी — क्या मैंने ग़द्दारी की?
रियाकारी ~ फ़र्ज़ और ख़ौफ़ गड्डमड्ड
सहारा ~ मेरे दिल को कौन थामे है?

दोस्त नशा पेश करते हैं

मुताल्लिक़ा जद्दोजहद

नापाक ~ क़ुर्बत और पहचान के लिए ख़ुदा की तख़्लीक़ का ग़ुलाम बनानेवाला, तबाहकुन इन्कार — क्या तू ख़ुदा से बेहतर जानता है?

बेक़रार ~ ख़ुद को धोका देना रिवाज है।

क़ाबू ~ जो मैं चाहता हूँ, या जो तू चाहता है?

गुनाह से लिपटे रहना
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
बे-तौबा ~ बेलगाम या मसीह से कटा हुआ, सुनता ही नहीं।
ग़ैर-सेहतमन्द ~ ख़ुदा के नेक हुक्मों से दूर रिश्ते घिसते जाते हैं।
भरोसा ~ बादशाह और ख़ालिक़ सब कुछ दुरुस्त करता है, जब मैं उसकी मर्ज़ी के हवाले होता हूँ।

ईसा की गवाही से शर्म
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
ख़ौफ़ज़दा ~ मैं किसे ख़ुश करना चाहता हूँ?
बे-मुहब्बत ~ एल्ची अपने ख़ुदावन्द की नुमाइंदगी करते हैं!
’इबादत ~ क्या मैं पूरी इन्जील जीता हूँ?

बुरी महफ़िल
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
बे-शरा’ ~ बेलगाम और बेपरवा — इसका अंजाम कहाँ?
नफ़्सपरस्ती ~ पाक को नापाक करो, जिस्म के पीछे चलो, शैतान के ग़ुलाम बनो।
पाकीज़गी ~ ईसा की ज़रूरत ही किसे है?

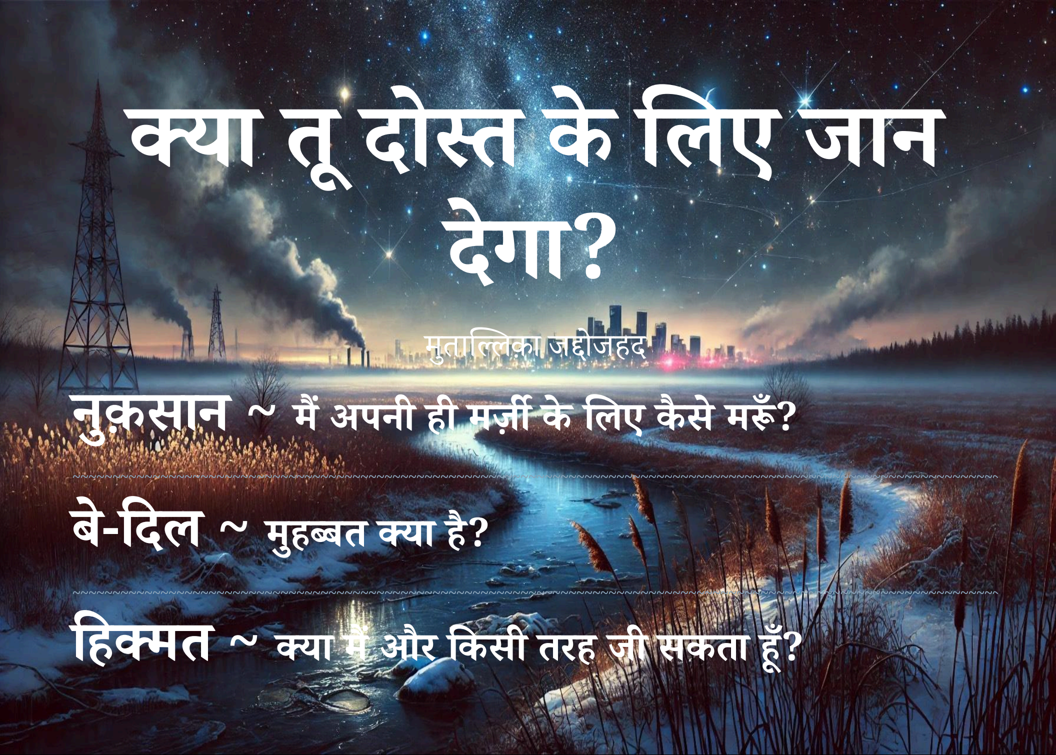

क्या तू दोस्त के लिए जान देगा?
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
नुक़सान ~ मैं अपनी ही मर्ज़ी के लिए कैसे मरूँ?
बे-दिल ~ मुहब्बत क्या है?
हिक्मत ~ क्या मैं और किसी तरह जी सकता हूँ?

“जिस्म में कांटा” — दुख
मुताल्लिक़ा जद्दोजहद
’आजिज़ करनेवाला ~ मेरा कौन सा हिस्सा रास्तबाज़ी की पुरसुकून राह से ख़ाली है?
मोहताज ~ ख़ुदा के हवाले होने में ताक़त
सब्र ~ फ़ज़्ल चाहिए — हर रोज़ माँगता हूँ।

मौत की भूख

मुताल्लिक़ा जद्दोजहद

मोहताज ~ 🙏🙏 *मसीह पर भरोसा रखने और सेर होने में मदद कर!* सब रूहानी तौर पर बेहाल हैं।

नासेर ~ जिस्मानी भूक तरसती ही रहती है।

ईमान ~ भूका रहते हुए क्या मैं ख़ुदा पर भरोसा रख सकता हूँ?